Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 67-68

कौशल विकासः–भविष्य व संभावनायें

डा0 गरिमा चौधरी, असि. प्रो. अर्थशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय नानौता, सहारनपुर उ.प्र. भारत।

सार

किसी भी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधन का अपना एक विशेष महत्व है। मानव शक्ति है। जो भौतिक साधनों को दिशा व गति प्रदान करती है। अगर किसी देश का मानवीय संसाधन कुशल व योग्य हो जायें तो वह उसकी मानवीय पूँजी बन जायेगा। कौशल निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अर्न्तगत मानव शक्ति के विकास हेतु भारी मात्रा में विनियोग किया जाता है। प्रो0 हार्बिसन के अनुसार, मानवीय पूँजीनिर्माण ऐसे व्यक्तियों को उपलब्ध कराना, और उसकी संख्या में वृद्धि करना है जो कुशल, शिक्षित व अनुभव पूर्ण हो, जिसकी देश के आर्थिक विकास व राजनैतिक विकास के लिए नितान्त आवश्यकता होती है। भारत में मानवीय श्रम की असीमित उपलब्धता है अन्य देशों के मुकाबले यह सस्ती भी है। भारत सवा सौ करोड की विशाल मानव शक्ति का देश है। देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम उम्र की है। भारतीय पांरपरिक शिक्षा व्यवस्था ने युवाओं को शिक्षा तो दी मगर कौशल विकास प्रदान करने में उससे चूक हो गयी। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अनुसार उच्चवृद्वि बाले 22 क्षेत्रों को साल 2022 तक लगभग 34 करोड़ कुशल श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी तथा पन्द्रह करोड श्रमिको को अपनी कुशलता में गुणात्मक सुधार करना होगा। भारत में करीब 44 प्रतिशत कप्यूटर प्रशिक्षण लेने वाले 60 प्रतिशत टैक्सटाइल से जुड़े कौशल की ट्रेनिंग लेने वाले बेरोजगार है। राष्ट्रीय कौशल मिशन में अनेक बाधाऐं भी है जिनमें सर्वप्रथम मांग के अनुरूप तकनीकी संस्थाओं का अभाव, कौशल व उद्योगो के बीच परस्पर तालमेल का अभाव, कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारण नवप्रर्वतन व कौशल निर्माण की संभावनायें काफी कम हो जाती है।

मुख्य शब्दः कौशल विकास, मानवीय पूंजी, कुशल श्रम शक्ति

किसी भी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधन का अपना एक विशेष महत्व है। मानव संसाधन वह शक्ति है जो भौतिक साधनों को दिशा व गति प्रदान करती है। अगर किसी देश का मानवीय संसाधन कुशल व योग्य हो जाये तो वह उसकी मानवीय पूँजी बन जायेगा।

ज्ञान और कौशल आर्थिक विकास के दो बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, बिना ज्ञान और कौशल के कोई भी देश विकास के रास्ते पर आगे नहीं बढ सकता है।

किसी भी अर्थव्यवस्था का श्रमिक अगर पूर्णरूप से कुशल हो तो वह अर्थव्यवस्था किसी भी आर्थिक बाधा को आसानी से पार कर सकती है। कौशल निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अर्न्तगत मानव शक्ति के विकास हेतु भारी मात्रा में विनिवेश किया जाता है ताकि देश की जनशक्ति, प्राविधिक ज्ञान योग्यता एवं कुशलता की दृष्टि से विशिष्टता प्राप्त कर सकें।

प्रो0 हार्बिसन के अनुसार, ''मानवीय पूँजी निर्माण से अभिप्रायः ऐसे व्यक्तियों को उपलब्ध कराना और उनकी संख्या में वृद्धि करना है जो कुशल, शिक्षित व अनुभव पूर्ण हों, जिसकी देश के आर्थिक व राजनैतिक विकास के लिए नितान्त आवश्यकता होती है। मानवीय पूँजी निर्माण, मानव में विनियोजन और उसकी सृजनकारी तथा उत्पादक साधन के रूप में विकास से सम्बद्ध है।''

भारत में मानवीय श्रम की असीमित उपलब्धता है अन्य देशों के मुकाबले यह सस्ती भी है। भारत सवा सौ करोड़ की विशाल मानव शक्ति का देश है। देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम और आधी आबादी की उम्र 25 साल से कम है। देश के विकास में इस युवा शक्ति का अहम योगदान है। अगर हम युवा शक्ति का सही इस्तेमाल करना चाहते है तो हमें उन्हे कार्य में निपुण बनाना होगा एक तरफ जहाँ भारत में साक्षरता दर बढी है, वही करीब 89 प्रतिशत युवाओं के पास किसी भी तरह की व्यावसायिक शिक्षा नहीं है। सबसे खराब स्थिति शिक्षित युवाओं की है जिनके पास या तो काम नहीं है, या काम उनकी योग्यता के अनुसार नहीं है।

अगर भारत की श्रमशक्ति की बात की जाये तो कुल श्रम का 60 फीसदी हिस्सा ग्रामीण है, दूसरा संगठित क्षेत्र जो करीब 8 फीसदी है और तीसरा शहरी क्षेत्र में रहने वाला असंगठित क्षेत्र का मजदूर जो करीब 32 फीसदी है।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, ''भारत का बाजार मूलरूप से असंगठित अनउत्पादक ओर सस्ते श्रम पर आधारित है।

भारतीय श्रम व वैश्विक स्थितिः– अगर भारतीय श्रम की बात की जायें तो करीब 80 फीसदी भारतीय श्रमिको को कोई व्यवसायिक शिक्षा तक नहीं हुई होती। सन् 2020 तक वैश्विक स्तर पर 6 करोड़ श्रम

शक्ति का अभाव हो जायेगा। कौशल विकास संस्थानों के सन्दर्भ में बात की जाये तो भारत में मात्र 15 हजार कौशल विकास संस्थान है, वहीं चीन में पांच लाख जर्मनी और आस्ट्रेलिया में एक–एक लाख संस्थान है। राष्ट्रीय प्रतिशत सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15 से 29 साल की उम्र के बीच के युवाओं में से सिर्फ 2 फीसदी को संस्थागत तथा 8 फीसदी को गैर संस्थानिक व्यवासायिक प्रशिक्षण हासिल हुआ, जबकि यही आंकड़ा जापान में 80 फीसदी, जर्मनी में 75 फीसदी, यूनाइटेड़ किगड़म में 68 फीसदी, कोरिया में 96 फीसदी है। विकासशील देशो के सन्दर्भ में अगर बात की जाये तो मानवशक्ति से सम्बन्धित दो समस्यायें उभर कर सामने आती है प्रथम आवश्यक न्यूनतम कुशलता का अभाव, तथा श्रमशक्ति अतिरेक पीपुलस्ट्रांग, व्हीबाक्स और सीआई आई द्वारा संयुक्त रूप से किये गये एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2022 तक देश में बड़े पैमाने पर कौशल युक्त श्रम की आवश्यकता पड़ने वाली है। (चित्र–1)

सीआई आई की नवीनतम इंडिया स्किल रिपोर्ट 2015 के अनुसार, हरसाल सवा करोड़ युवा रोजगार क्षेत्र में आते है लेकिन उद्योगो की मांग के अनुसार वे प्रशिक्षित नहीं होते है। जिस कारण उद्योगो में श्रमिकों की मांग व पूर्ति में अन्तर बना रहता है। रिपोर्ट के अनुसार भात्र 37 प्रतिशत ही रोजगार के योग्य होते है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अनुसार उच्चवृद्धि वाले 22 क्षेत्रों को साल 2022 तक लगभग 34 करोड़ कुशल श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी। पन्द्रह करोड़ श्रमिकों को अपनी कुशलता में गुणात्मक सुधार करना होगा। भारत में करीब 44 प्रतिशत कम्पयूटर प्रशिक्षण लेने वाले 60 प्रतिशत टैक्सटाइल से जुड़े कौशल की ट्रेनिंग लेने वाले बेरोजगार है।

मांग चित्र–2022 तक कुशल श्रमशक्ति

भवन और निर्माण	84.25
रियल स्टेट और सेवायें	0
रत्न और आभूषण	0.18
चमड़ा	7.3
संगठित रिटेल	101.65
कपड़ा और वस्त्र	48.1
इलैक्ट्रानिक ओर आईटी हार्डवेयर	13.95
ऑटो	64.54
आईटी और आईटी एस (संगठित रोजगार)	51.4
बी0एसएफ आई	29.03
फर्नीचर व फर्निशग	0
पर्यटन व आतिथ्य	36.06
निर्माण	0
रसायन और औषधियां	0.72
खाद्य प्रसकरण	10.06
स्वास्थ्य सुविधाएं	50.1
परिवहन	4.44
मीडिया व मंनोरजन	3.85
शिक्षा	17.09
चुनिंदा औपचारिक क्षेत्र	56.74
असंरचना	12.67
हथकरधा व दस्तकारी	4.63
कृषि	5.53
पशधुन व डेयरी	2.24
वैकल्पिक ऊर्जा	0.18
विनिर्माण	11.48
अभियांत्रिकी	2.45
उधम कौशल	14
सहज कौशल व वापिक अंग्रेजी	6
ग्रामीण सेवाये	3.87
अन्य प्रंवधन पाठक्रम	0.12

स्त्रोतः ए आई सी टी 2014

वित्त मंत्रालय ने स्वंय माना है कि उद्योगों की जरूरत की तुलना में केवल 5 फीसदी श्रमशक्ति ही उद्योगों में कार्य करने के लिए कुशल है।

बांधायेः–कौशल विकास में सबसे बड़ी बाधा है कि उद्योग जगत की बदली हुई जरूरत के अनुसार श्रमिक प्रशिक्षित नहीं हो पाते है। देश में पर्याप्त मात्रा में व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण संस्धानों का अभाव है। अगर श्रम शक्ति का कौशल बाजार की मांग के अनुरूप नहीं है तो भी मांग और पूर्ति पक्ष के बीच अथिरता उत्पन्न हो जाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होने के कारण नवप्रर्वतन व कौशल निर्माण की संभावनायें धूमिल हो जाती है।

प्रयासः–कौशल विकास मंत्रालय की तरफ से अनेक प्रयास किये जा रहे है। कौशल विकास को स्कूली पाठ्यक्रम से जोड़कर इसे आगे बढाया जा सकता है। कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रशिक्षकों को भलि भांति प्रशिक्षण दिया जाए। सरकार, उद्योगो व श्रमिकों के बीच सामजस्थ बैठाया जाये जिससे उद्योगों की मांग के रूप अनुरूप श्रम शक्ति का विकास हो सकें।

अगर भारतीय श्रमशक्ति में कौशल गुणवत्ता का विकास हो जायें तो वह दिनदूर नहीं जब भारत विश्व की शीर्घ अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा।

सन्दर्भ

1. विश्व बैंक रिपोर्ट–2010
2. स्किल उपलब्ध मेंट इन इंडिया, विश्व बैंक रिपोर्ट–2006
3. सीआई आई स्किल डवलपमेंट इसी शिएटिब
4. योजना (विभिन्न संस्करण)
5. F.H. Harrison:- Human Resources in development planning May 1962